केदारनाथ अग्रवाल का साहित्य और सामाजिक यथार्थ

ज्योति कुशवाहा
पी-एच.डी. शोधार्थी, हिन्दी विभाग
हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

शोध सारांश
साहित्य जगत के दैदीप्यमान नक्षत्र श्री केदारनाथ अग्रवाल हिंदी के प्रगतिशील काव्यधारा के प्रख्यात साहित्यकार माने जाते हैं। वास्तव में केदारनाथ अग्रवाल युगद्दष्टा कवि के साथ-साथ जनता के कवि, धरती के कवि, किसान के कवि, खेतिहर मजदूर कवि एवं कचहरी के कवि भी हैं। आपने मार्क्सवादी दर्शन को जीवन का आधार माना है क्योंकि आपके मन में जनसाधारण के प्रति गहरी एवं व्यापक संवेदना व्याप्त है। अजित पुष्कल जी ने भी महसूस किया "संवेदना के धरातल पर केदार की कविता प्रेमचंद की कहानी के नजदीक लगती है।"

बीज शब्द
प्रगतिशील, मार्क्सवादी विचारधारा, हरिजनोंद्धार, जनवादी दृष्टिकोण, क्रांतिकारीमजदूर, मानवीय संवेदना, सामाजिक यथार्थ।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिशील विचारधारा के कवि हैं, इनकी रचनाओं में खेत-खलिहान, किसान-मजदूर, शोषित-पीड़ित एवं आम-आवामकी पीड़ाओं को बड़ी प्रमुखता से उठाया गया है।अगर हम केदारनाथ अग्रवाल जी के मित्रों की चर्चा करें तो सौभाग्य से उन्हें ऐसे ही मित्र मिले थे जो अपनी साहित्य और रचनाओं के द्वारा समाज और राष्ट्र की जनता को हमेशा जागृत करने का प्रयास करते रहते थे। मित्रों के सानिध्य ने अग्रवाल जी को समय-समय पर प्रेरणा और मार्गदर्शन किया। उनके मित्रों में डॉ रामविलास शर्मा, नरेंद्र शर्मा, डॉ हरिवंश राय बच्चन, डॉ गोरखनाथ द्विवेदी, अशोक बाजपेयी, कामता प्रसाद, अमृतलाल नागर, महादेवी वर्मा, धनंजय वर्मा, सुदीप बनर्जी, डॉ अशोक त्रिपाठी, शिव कुमार सहाय आदि रहें हैं। केदार जी अपने मित्रों से सदैव कहा करते थे यदि मेरी रचनाओं में कोई कमी है तो मुझे निष्पक्ष भाव से बताओ क्योंकि यही रचनाएं युग यथार्थ का बोध करायेगी। केदार जी ने अपने मित्रों से बहुत कुछ लिया और उन्हें बहुत कुछ दिया भी। पत्र साहित्य जगत का 'मित्र संवाद' उनके और उनके खास मित्र रामविलास शर्मा जी के पत्रों का जीवंत प्रमाण है।

'पतिया' उपन्यास में निहित सामाजिक यथार्थ -'पतिया' अग्रवाल जी द्वारा रचित उपन्यास है। जिसमें उन्होंने समाज में फैली तत्कालीन समस्याओं को व्यक्त किया है। राजनीतिक बदलाव के इस युग में सामाजिक और नैतिक मूल्य भी परिवर्तित हो रहे हैं सामाजिक और आर्थिक स्थिति गंभीर और विचारणीय हैं ऐसी स्थिति में देश में बाल विवाह, पर्दा प्रथा, दहेज प्रथा, वेश्यावृत्ति, अनमेल विवाह, छुआछूत आदि समस्याएँ सिर उठाए खड़ी है जो राष्ट्र और समाज के विकास में बाधा बनती हैं। कवि केदारनाथ जनता के पक्षधर थे इसलिए निम्न वर्ग की पीड़ा किसानों और दलितों के शोषण आदि को देखकर उनके मन में जो आक्रोश उत्पन्न होता था उससे वे यथार्थ की ओर अग्रसर होते चले जाते थे। 'पतिया' में एक किसान परिवार की साधारण सी बालिका के जीवन की कहानी को बड़े ही रोचक और मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ साथ पूँजीपति एवं जमीदार वर्ग पर तीक्ष्ण व्यंग किया गया है। इस रचना में केदारनाथ जी पर पड़े मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव देखने को मिलता है। उनकी रचनाओं में हमें मानवीय संघर्ष की प्रधानता देखने को मिलती है जीवन जगत के मध्य की दूरी को उन्होंने अनोखे ढंग से संजोया है।

क्रांतिकारी चेतना के संवाहक कवि

केदारनाथ अग्रवाल जी क्रांतिकारी कवि के रूप में उभर कर सामने आते हैं उनके साहित्य जगत में पुरातन परंपराओं को तोड़कर नवीन संदर्भों में साहित्य सृजन देखने को मिलता है। हम कह सकते हैं "केदारनाथ अग्रवाल टिमटिमाते लालटेन नहीं, बल्कि उगते सूरज के कवि हैं यह सूरज मनुष्य के श्रम का सूरज है।"केदार जी की कविताएं अनुभव से उपजी हैं। उनकी बहुत सी कविता मानवीय चेतना को दृश्य और दृष्टि देने की सक्षम इकाई है। इसलिए कवि का यह फर्ज होता है कि वह कविता को सशक्त और सार्थक बनाये। उनकी बहुत सी ऐसी कविताएं हैं जो राजनीतिक और प्रचारात्मक है। उनका संबंध जन आंदोलन से है। जब कांग्रेसी नेता लंदन गए थे उनके वापस आने पर भारत की संघर्षरत जनता की ओर से केदारनाथ अग्रवाल उनसे प्रश्न पूछते नजर आते हैं -

"बोलौ आजादी लाये ?
नकली मिली है कि असली मिली है ?
कितनी दलाली में कितना मिली है ?"[1]

अनुभूतसत्यको उजागर करना

केदारनाथ अग्रवाल जी अपने साहित्य में अनुभूतसत्य को ही प्रेषित करते हैं।उनकी रचनाएं संशयऔरसंदेहसे कोसों दूर रही, जिसका जिक्र उन्होंने स्वयं किया है - "जैसे मैं संशय और संदेहों से कोसों दूर रहता हूँ वैसे मेरा गद्यभी उससे उतनी ही दूर रहता है जैसे मैं आदमी को उसके परिवेश के संदर्भ में समझता हूँवैसे मेरा गद्य उसे उसके परिवेश के संदर्भ में समझता है।"[2] चूंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, इसलिए समाज में हो रहे परिवर्तनों से वह अछूता नहीं रह सकता। समाज का साहित्य और साहित्य का समाज पर प्रभाव पड़ना अवश्यम्भावी है। केदारनाथ अग्रवाल जी ने समाज में निहित यथार्थ को सामने लाने का प्रयास किया।"हिंदी के अन्य सभी कवियों की अपेक्षा वे अधिक सफल हुये और इसका कारण उनकी लोकजीवन से निकटता, यथार्थ भेदिनी दृष्टि तथा उनका महान जनवादी दृष्टिकोण है।"[3]

काव्य में प्रतिबिंबित जनवादी दृष्टिकोण

केदारनाथ अग्रवाल जी जनवादी कवि है। वे साधारण वर्ग की पीड़ा का बड़ा ही यथार्थ और हृदय स्पर्शी चित्रण अपने साहित्य में करते है। केदार जी एक जनप्रतिनिधि कवि रहेंहैं, कविता के विषय में उनका दृष्टिकोण अलग रहा। जिसका जिक्र करते हुए उन्होंने कहा है - "कविता के बारे में मेरा दृष्टिकोण दूसरे विद्वानों के दृष्टिकोणों से सर्वथा भिन्न था और जो बात मैंने तब कही थी उसे गले के नीचे उतारना आसान न था।"[4] भूखसेबेहाल, परेशान जनता का जिक्र करते हुए उन्होंने अपनी रचना गुलमेहंदी में लिखा है -

"बाप बेटा बेचता है
भूख से बेहाल होकर
धर्म धीरज प्राण खोकर
हो रही अनरीति बर्बर
राष्ट्र सारा देखता है
बाप बेटा बेचता है।"[5]

हरिजनोंद्धार हेतु कवि का संघर्ष

भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी हरिजनों पर अत्याचार किया जाता रहा यह हरिजन अधिकतर खेतिहर मजदूर हुआ करते थे। आपका जन्म 'कमासिन'के एक जमींदार परिवार में हुआ था। कमासिन के प्रति, वहां के लोगों के प्रति आत्मीयता आपकी कविताओं में गुंजायमान दिखलाई पड़ती है। सन 1946 में जब यह हरिजन मजदूर अपने अधिकार के लिए लड़ रहे थे उस समय उनके संघर्ष का चित्रण आप के काव्य में दिखलाई पड़ता है -

"डंका बजा गाँवकेभीतर
सब चमार हो गयेइकट्ठा
एक उठा दहाड़कर
हमपचास हैं,
मगर हाथ सौ फौलादी हैं।
सौ हाथों की एका का बल बहुत बड़ा है
हम पहाड़ को भी उखाड़ कर रख सकते हैं।"[6]

साहित्य सृजन और वकालत साथ-साथ –

केदारनाथ अग्रवाल जी कवि होने के साथ-साथ पेशे से वकील भी थे उन्होंने आदमी को आदमी के धरातल पर जीते पर रखते देखा था। सामाजिक जनजीवन से उनका गहरा नाता रहा। अपनी उन्हीं अनुभूतियों को 'पतिया' में व्यक्त किया। चूंकि अग्रवाल जी वकील थे इसलिए कोर्ट कचहरी से उनका घनिष्ठ संबंध था। न्याय के दरबार में रचा जाने वाला नाटक उन्होंने भरपूर देखा। इसलिए उनके साहित्य में न्याय व्यवस्था की आलोचना भी प्रचुर मात्रा में दिखाई पड़ती है -

"सच के पाँव उखड़ते
झूठ के जब झंडे गड़ते
सच जीते तो कैसे
न्याय मिले तो कैसे ?"

खराब न्याय व्यवस्था एवं पुलिस प्रशासन की वजह से गुनहगारों ने न्याय व्यवस्था का मजाक बनाकर रख दिया है अग्रवाल जी इसकी तीव्र आलोचना करते हैं -

"कानून हो रहा है
इंसाफ के खिलाफ
हथियार"[8]

क्रांतिकारी स्वाधीनता संग्राम और केदारनाथ अग्रवाल –

स्वाधीनता संग्राम की आकांक्षा केदारनाथ अग्रवाल के स्वर की मूल पहचान रही। सन 1946 में जब आजादी का सपना साकार होता नजर आ रहा था। उस समय तत्कालीन शासकों ने शासकों ने जनता की आवाज को दबाकर अंग्रेजों से समझौता किया। जनता के ध्येय के साथ दगाबाजी की।उसके बदले में जनता को अहिंसा की सीखऔर आजादी का दिलासा दिलाया। अग्रवाल जी ने ऐसी मार्मिक परिस्थितियों का वर्णन अपनी कविताओं में किया है -

"आफत ही आफत सब आई
लेकिन दिल्ली से आजादी

अब-तक अब-तक हाय न आई
हाय न आती !!'[9]

प्रगतिशील मार्क्सवादी विचारधारा –

अग्रवाल की प्रगतिशीलता के केन्द्रबिन्दु में भारत की श्रमजीवी जनता है। उसी जनता के प्रति जब स्नेहा प्रगाढ़ होता गया जनता के संघर्ष में उनकी आस्था बढ़ती गई और भविष्य के प्रति चिंता उत्पन्न होने लगी। बस यहीं से उनके मन में मार्क्सवादी विचारधारा का जन्म हुआ। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद जहाँ बहुत से लेखक प्रगतिशील दमन से डरकर यह रामराज के लुभावने सपने देखकर नव निर्माण में हाथ बंटाने चले गए वहाँ केदारनाथ जी उन लेखकों में शामिल हुए जो इन सभी परिस्थितियों को जनता की ओर से संबोधित कर सके जनता की आवाज को बुलंद कर सके।कवि कहते हैं श्रमिक वर्ग रात-दिन मेहनत करके अपनी जीविका चलाता है उसे संघर्ष में अपना जीवन जीता है, भोगता है और गढ़ता है एवं वह अंत तक आशा बना रहता है -

जिंदगी को वह गढ़ेंगे
जो शिलाएं तोड़ते हैं
जो भागीरथ नीर की
निर्भय से शिलाएं मोड़ते हैं
यज्ञ को इस शक्ति
श्रम को श्रेष्ठतम मैं मानता हूँ
जिन्दगीकोवहगढ़ेंगे
जो खदानें खोदते हैं।[11]

अंततः हम कह सकते हैं कि केदारनाथ अग्रवाल जी जनसाधारण के कवि थे जिन्होंने समाज में रहते हुए सामाजिक समस्याओं का अनुभव किया एवं जनता के दुख दर्द और समस्याओं को यथार्थ रीति से अपने साहित्य में अभिव्यक्त किया।स्वयंकी समस्याओं को लेकर लड़ते हुए कृषक मजदूरों के संघर्ष को प्रगतिशील लेखन के माध्यमसे भरपूर सहयोग करते हुए उनका मार्गदर्शन किया।अपनी रचना विचार बोध में अग्रवाल जी स्वयं लिखते हैं - "मुझे पूरा विश्वास है की प्रगतिशील लेखक ऐसे विरोध का मुंहतोड़ उत्तर देंगे और जनता की चेतना को दिग्भ्रमित होने से बचाएंगे।"[12] मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावितअग्रवालजीने अपने गांव में ही नहीं बल्कि अपने जनपद के साथ-साथ पूरे राष्ट्र में जन चेतना का नया संचार किया।

संदर्भ :

1. अग्रवाल, केदारनाथ, कहे केदार खरी-खरी, पृष्ठ संख्या - 41
2. अग्रवाल, केदारनाथ, समय-समय पर, पृष्ठ संख्या - 07
3. मालवीय, डॉ रामचन्द्र, तदैव, विचार - रामेश्वर शर्मा, पृष्ठ संख्या - 18
4. अग्रवाल, केदारनाथ, समय-समय पर, पृष्ठ संख्या – 03
5. अग्रवाल, केदारनाथ, गुलमेहंदी, पृष्ठ संख्या - 24
6. अग्रवाल, केदारनाथ, कहे केदार खरी-खरी, पृष्ठसंख्या - 21
7. अग्रवाल, केदारनाथ, कहे केदार खरी-खरी, पृष्ठ संख्या - 144-145
8. वही, पृष्ठसंख्या - 147
9. वही, पृष्ठ संख्या - 36
10. अग्रवाल, केदारनाथ, विचार बोध, पृष्ठ संख्या - 49
11. अग्रवाल, केदारनाथ, जो शिलाएं तोड़ते हैं, कविता -1

हिन्दी की शैलियाँ

भाषाशास्त्र के अनुसार हिन्दी के चार प्रमुख रूप या शैलियाँ हैं :

- **मानक हिन्दी - हिन्दी का मानकीकृत रूप, जिसकी लिपि देवनागरी है। इसमें संस्कृत भाषा के कई शब्द है, जिन्होंने फ़ारसी और अरबी के कई शब्दों की जगह ले ली है। इसे शुद्ध हिन्दी भी कहते हैं। आजकल इसमें अंग्रेज़ी के भी कई शब्द आ गये हैं (ख़ास तौर पर बोलचाल की भाषा में)। यह खड़ीबोली पर आधारित है, जो दिल्ली और उसके आस-पास के क्षेत्रों में बोली जाती थी।**
- **दक्खिनी - उर्दू-हिन्दी का वह रूप जो हैदराबाद और उसके आसपास की जगहों में बोला जाता है। इसमें फ़ारसी-अरबी के शब्द उर्दू की अपेक्षा कम होते हैं।**
- **रेख़्ता - उर्दू का वह रूप जो शायरी में प्रयुक्त होता था।**
- **उर्दू - हिन्दवी का वह रूप जो देवनागरी लिपि के बजाय फ़ारसी-अरबी लिपि में लिखा जाता है। इसमें संस्कृत के शब्द कम होते हैं, और फ़ारसी-अरबी के शब्द अधिक। यह भी खड़ीबोली पर ही आधारित है।**